

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्री रङ्गनाथदिर्यमणिपादुकाभ्यां नमः

श्रीकरितार्किकसिंहस्य सर्गतल्लस्रतल्लस्य
श्रीमद्वेङ्कटनाथस्य रेदान्ताचार्यस्य कृतिषु
श्रीरङ्गनाथपादुकासहस्रे

॥ चित्रपद्धतिः त्रिंशी ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री रङ्गनाथदिर्यमणिपादुकाभ्यां नमः

॥ चित्रपद्धतिः त्रिंशी ॥

श्रीमान् रेङ्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी ।

वेदान्ताचार्यरथो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

प्रतिष्ठां सर्वाचित्राणां प्रपद्ये मणिपादुकाम् ।
त्रिचित्रजगदाधारो त्रिचूर्णत्र प्रतिष्ठितः ॥ 30.1 ॥

शृणु ते पादुके ! चित्रं चित्राभिर्मणिभिर्बिभोः ।
युगक्रमदुरो रर्णान् युगपद्ब्रह्मे स्वयम् ॥ 30.2 ॥

सुरासुरार्चिता धन्या तुङ्गमङ्गलपालिका ।
चराचराश्रिता मान्या रङ्गपुङ्गरपादुका ॥ 30.3 ॥

पद्मेर मङ्गलसरिं पारं संसारसन्ततेः ।
दुरितक्षेपिका भूयां पादुका रङ्गभूपतेः ॥ 30.4 ॥

अनन्यशरणः सीदन् अनन्तक्लेशसागरे ।
शरणं चरणत्राणं रङ्गनाथस्य संश्रये ॥ 30.5 ॥

प्रतिभायाः परं तद्भुं विभ्रती पद्मलोचनम् ।
पश्चिमायामरस्त्रायां पादुके ! मुह्यतो मम ॥ 30.6 ॥

यामः श्रयति यां धत्ते यैन यात्याय याच्छ या ।
याहस्य मानाय यै रान्या सा मामरतु पादुका ॥ 30.7 ॥

চর্যা নঃ শৌরিপাদু ! ৎরং প্রাযশ্চিত্তেৎরনুত্তমা।
নিরেশ্যসে ততঃ সদ্ভিঃ প্রাযশ্চিত্তেৎরনুত্তমা ॥ 30.8 ॥

রামপাদগতা ভাসা সা ভাতা গদপামরা।
কাদুপানঞ্চ কাসহ্যা হ্যাস কাঞ্চনপাদুকা ॥ 30.9 ॥

বাঢ়াঘালীঝাটতুচ্ছে গাথাভানায ফুল্লখে।
সমাদৌ শঠজিচ্ছুডাং বৃণোষি হরিপাদুকে ! ॥ 30.10 ॥

সা ভূপা রামপারস্থা রিভূপাস্তিসপারতা।
তারপা সকূপা দুষ্টিপূরপা রামপাদুকা ॥ 30.11 ॥

কারিকা ন ন যাত্রাযা যা গেযাহস্যস্য ভানুভা।
পাদপা হহ সিদ্ধাসি যজ্ঞায মম সাহঞ্জসা ॥ 30.12 ॥

সরাঘরা ঋতৌ দৃষ্টা পাদুকা সনূপাসনা।
সলাঘরা গতৌ শ্লিষ্টা স্বাদুর্মে সদুপাসনা ॥ 30.13 ॥

কার্যাযাস্থিত মার্গং ব্যাজযাতগমার্গকা।
কামদা জগতঃ স্থিত্যে রঙ্গপুঙ্গরপাদুকা ॥ 30.14 ॥

সুরকার্যকরী দেবী রঙ্গধূর্যস্য পাদুকা।
কামদা কলিতাদেশা চরন্তী সাধুরত্নসু ॥ 30.15 ॥

ভরতারাদিতাং তারাং বন্দে রাঘরপাদুকাম্।
ভরতাপাধিতান্তানাং বন্দ্যাং রাজীরমেদুরাম্ ॥ 30.16 ॥

কাদুপাস্যসদালোকা কালোদাহতদামকা।
কামদাহধ্ররিরংসাকাহকাসা রঙ্গেশপাদুকা ॥ 30.17 ॥

পাপাকুপারপালীপা ত্রিপাদীপাদপাদপা।
কুপারুপা জপালাপা স্বাপা মাহপানুপাধিপা ॥ 30.18 ॥

স্থিরাগসাং সদারাধ্যা রিহতাকততামতা।
সৎপাদুকে ! সরাসা মা রঙ্গরাজপদং নয ॥ 30.19 ॥

স্থিতা সমযরাজৎপা গতরা মাদকে গরি।
দুরংহসাং সন্নতাদা সাধ্যাতাপকরাসরা ॥ 30.20 ॥

লোকতারাকামচারা করিরাজদুরারচা।
তারা গতে পাদরাহহম রাজতে রামপাদুকা ॥ 30.21 ॥

জযামপাপামযা জযামহে দুদুহে মযা।
মহেশকাকাশহেম পাদুকাহমমকাদুপা ॥ 30.22 ॥

পাপাদপাপাদপাপা পাদপাদদপাদপা।
দপাদপাপাদপাদ পাদপাদদপাদপা ॥ 30.23 ॥

কোপোদ্দীপকপাপেহপি কুপাপাকোপপাদিকা।
পুদপাদোদকাপাদোদ্দীপিকা কাহপি পাদুকা ॥ 30.24 ॥

ততাত্তাতিতত্তেতা তাততীতেতিতাতিতুৎ।
তত্তত্তাততিততা ততেতাতেততাতুতা ॥ 30.25 ॥

যাযাযাযাযাযাযাযাযাযাযাযাযাযাযাযা।
যাযাযাযাযাযাযাযা যা যা যা যা যা যা যা যা ॥ 30.26 ॥

রঘুপতিচরণারনী তদা
রিরচিতসঞ্চরণা রনীপথে।
কৃতপরিচরণা রনীপকৈঃ
নিগমমুখৈশ্চ রণারনীগতা ॥ 30.27 ॥

দত্তকেলিং জগৎকল্পনানাটিকা
 রঙ্গিণা রঙ্গিণা রঙ্গিণা রঙ্গিণা।
 তাদৃশে গাধিপুত্রাধ্বরে ংরাং রিনা
 পাদুকা পাদুকা পাদুকা পাদুকা ॥ 30.28 ॥

পাদপাপাদপাপাদপাপাদপা
 পাদপাপাদপাপাদপাহপাদপা।
 পাদপাপাদপাপাদপাপাদপা -
 পাদপাপাদপাপাহহদপাপাদপা ॥ 30.29 ॥

সাকেতত্রাণরেলাজনিতততনিজ প্রাক্কণ শ্রীপ্রভাসা
 সাভা প্রশ্রীটর্যামিযমমযমির্যাপদুচ্ছেদিলাসা।
 সালাদিচ্ছেদতিগ্মাহররুরুরহ হ্রীকরস্যামরাসা -
 সা রামস্যাভিঘ্নমভ্যাজতি ন ন নতিজস্বলমুত্রাতকে সা ॥ 30.30 ॥

রম্যে রেশ্মনি পাপরাক্ষসভিদাস্বাসক্তধীনাযিকা
 নন্তুং কর্মজদুর্মদালসধিয়াং সা হন্ত নাথীকৃতা।
 সদ্বাটভমিকাসু তাপসতপোরিশ্রম্ভুভূযন্ত্রিকা
 কাচিৎস্বৈরগমেন কেলিসমযে কামব্রতা পাদুকা ॥ 30.31 ॥

শ্রীসংরেদনকর্মকৃদ্রসু তর স্যামৃদ্ধধৈর্যস্ফুটঃ
 শ্রীপাদারনি রিস্তৃতাসি সুখিনী ংরং গেযযাতাযনা।
 রেদান্তানুভরাতিপাতিসুতনুঃ সান্দ্রেড্যভারপ্রথে -
 হঙ্কস্থা চাচ্যুতদির্যদাস্যসুমতিঃ প্রাণস্বসীতাধন ! ॥ 30.32 ॥

কনকপীঠনিরিশ্ঠতনুস্তদা
 সুমতিদাযিনিজানুভরস্মৃতা।
 রিধিশিরপ্রমুখৈরভিরন্দিতা
 রিজযতে রঘুপুঙ্গরপাদুকা ॥ 30.33 ॥

দীনগোপীজনিক্লিষ্টভীনুৎ সদা
 রামপাদারনি ! স্নানুভারস্থিতা।
 এধি মেহরশ্যমুত্তারভারপ্রিতা
 তেজসা তেন ঘৃষ্টিং গতা পালিকা ॥ 30.34 ॥

ধামনিরাকৃততামসলোকা
 ধাতুমুখৈর্নিতা নিজদাসৈঃ।
 পাপমশেষমপাকুরুষে মে
 পাদু ! রিভূষিতরাঘরপাদা ॥ 30.35 ॥

কৃপানঘত্রাতসুভূরদুষ্টা
 মেধ্যা রুচা পারিষদামভূপা।
 পাদারনি ! স্ত্যানসুখৈর্ন তৃপ্তা
 কান্ত্যা সমেতাধিকৃতাহনিরোধা ॥ 30.36 ॥

সারসসৌখ্যসমেতা
 খ্যাতা পদপা ভুরি স্নাত্তা।
 সাহসকার্যরনাশা
 ধীরা রসুদা নরন্যাসা ॥ 30.37 ॥

সান্যাহরনদা সুররা -
 হধীশানা র্যকাসহসা।
 জ্ঞা স্না রিভূপাদপতা -
 খ্যাতা মে সখ্যসৌ সরসা ॥ 30.38 ॥

তারস্ফারতর স্বর -
 রসভররা সা পদারনী সারা।
 ধীরস্বৈরচরস্থির
 রঘুপুর রাসরতি রামসরা ॥ 30.39 ॥

चरमचरं च नियन्त्रः चरणारनिदम्परेतरा शौरेः।
चरमपुरुषार्थचित्रौ चरणारनि ! दिशसि चररेषु सताम् ॥ 30.40 ॥

॥ इति श्रीकरितार्किकसिंहस्य सर्वतन्त्रस्वतन्त्रस्य
श्रीमद्वेङ्कटनाथस्य वेदान्ताचार्यस्य कृतिषु
श्रीरङ्गनाथपादुकासहस्रे चित्रपद्धतिः त्रिंशी ॥
करितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥